

Written by आरडी शाही  
Friday, 25 May 2018 07:15

: 00000000 00 000 000000 0000000 00 000 00 00 0000 0000 0000 00 0000  
00000000 00 : 0000 0000 000 00 000000000 00 0000000 0000, 000000 000  
0000000000 00 000 00000 00 00 0000000 00 : 000 000000000 00 000 00 0000000 00  
00 00 0000 00000000 0000 :

0000 0000

0000 : सन शुक्ला से मेरा परिचय तो नहीं है लेकिन वो शायद मुझे पहचानते रूर होंगे क्यों कि मैं वगित कई सालों से उन्हें नमस्कर करता हूं . वैसे वो **low profile** रहते हैं .उनके कोई तवज्जह भी नहीं देता .उन्हे "लोकप्रहरी " के माध्यम से कई बार न्यायालय मे **PIL** के लिये धक्के खाते देखता था तो मुझे उन पर गुस्सा भी आता था .सोचता था इतने भले आदमी के इतना अपमान और पीडा क्यों ? हम अच्छे **cause** के लिये संघर्षरत लोगों के अच्छे से क्यों नही देखते ? लेकिन वो कर्मयोगी है .आज उनकी कई सालों का प्रयास रंग लाया जब सरकार के हीला हवाली और टाल मटोल के वावजूद सुप्रीम कोर्ट का आदेश रंग लाया और सभी पूर्व माननीय अपना दूसरा ठकिना तलाश रहे है .....

00000000000000 00 000000 00 000000 00 000 000000 0000000 00000 00 000000 00000000 :-

[0000000 00 00000000000000](#)

Virendra Vikram Singh : उन्हें और आप के बधाई

Prem Prakash Singh सर, शायद ऐसे और लोगों की जरूरत है ,हमारे बीच भी है कुछ क--प जैसे ,जनिके होने से कुछ होने का विश्वास होता है

Savita Bhagwat : आदरणीय शाही जी, चुंधियाते काँच के ढेर (तथाकथति रतनों ) में हीरा बमुश्किल और देर से ही पहचान में आता है, उसे आना ही होता है ,यह "कुछ" जौहरी जान भी रहे होते हैं(स्व सन्दर्भ ही लें.....हम **noble cause** के लिये संघर्षरत लोगों के अच्छे से क्यों नहीं देखते? लेकिन वे कर्मयोगी हैं.....किसी संज्ञा वशिषण के पारदर्शी और चमकदार "मूल्य" बनने बनाने में, "धातुक्रम" के प्रक्रम से तो गुजरना ही होता है.....और यही इन "आदर्श हीरे" के साथ भी हुआ है

Written by आरडी शाही  
Friday, 25 May 2018 07:15

---

G L Yadav Adv : बेहद सटीक और सुन्दर टपिपणी भ्राता श्री

Savita Bhagwat : G L Yadav Adv हे वत्स! तुम्हें "मानवीय मूल्यपोषक" इसी आर्ष परम्परा क "पाणिनि" और "व्यास " होना है यदुश्री जी ल ....और तुम सम्भवनाओ से भरे भी हो आदरणीय

Shahi Shahi : जी KE " मुक्त "गुरुकुल" में तुम सरीखे "मर्मज्ज" अनुभव कर लोकहित में "मुखरति" होते हैं तो लोकधर्म भी सधता है ,और आनंदानुभूति भी होती है

Mohit Dwivedi : हमने कोर्ट no1 में उन्हें आहत होकर भरे हुए गले और आंखों में भी देखा है जब 'sirजी' ने उनके credentials के doubt किया था जनहित याचिकाओं पर काम कर अपनी शोहरत बटोरने वालों में से शायद ही किसी महारथी में से कभी ऐसा ऐसा व्यवहार दिखाया हो

000000000-000 00 000000 000000 00 000000 00 000 000000 0000000 00000 00 000000 000000 :-

[000000 0000 0000](#)

Shahi Shahi : Sir jee jaise longo kaa ilaz krte krte kabhee kabee mera hath idhar udhar mud jata hae aur meree kirkiree ho jatee hae.hahaha.

Kamlesh Shukla : Ji, Bhai Saheb, Shukla Ji bahut hi humble person hain.

Pramod Singh Gahmari : ऐसे ही कर्मयोगीयो के आज ज़रूरत है बेईमान और ऊचक्के आज के सत्ता लोभी मकन चोरो के ऐसे लोग ही सही कर सकते है

Written by आरडी शाही  
Friday, 25 May 2018 07:15

---

Jitendra Pratap Singh : क्या कोई आदेश हुआ है भाई साहब ?

Ashok Shahi : आंच आती है [] शायद इस लिये लोग उपेक्षा करते हैं[] कैसे स्वीकर करे []

Shrikant Shukla : This is also a type of addiction. Why you ignore Sibbal & Prashant only because he belongs to your category.

Devesh Kumar Misra : शुक्ला जी बहुत ही प्रशंसा केपात्र हैं[]

Shiivaani Kulshresthhaa : सर अभी भी कई वषियों पर जनहति याचकि होना जरुरी है पर नही हो पा रही[] यदि अधिवक्ता चाहे तो कई वभागों के स्कैम बाहर ला सकते हैं पर हम मे से कोई ऐसा नही करेगा[] हम सरिफ मशीनें हैं[] जबकि अधिवक्ता सोशल इंजीनियर होते हैं...

VP Singh Chauhan : धन्यवाद शाही साहब.. माननीय सुप्रीम कोर्ट के माननीयों के अवैध कब्जे छुडाने के लिये आदेश पारति करने की नींव रखने वाले शुक्ला जी का नाम हर किसी को नही मालूम होगा.. सभी भारतीयों की तरफ से शुक्ला जी के और आपके हार्दिक आभार..

Surendra Pratap Singh : Father and son both can live in village if they have no house in lucknow in there grand father house

0000 000000 00 00000 00000 00 000000 00 000 00000 000000 00 0000 00 :-

Written by आरडी शाही  
Friday, 25 May 2018 07:15

---

0000 0000

( 0000 0000 क लखनऊ हाईकोर्ट में वकील है। जन-सामान् य में उनकी छवि कमानवीय और सरल, लेकिन वाकई कवदिवान अधिवक्ता की मानी जाती है। हमने शाही क यह पत्र उनकी फन्नी वाल से बटोरा है। आपके बता दें क स न शुक् ला यूपी के वरिष्ठ ठ आई स रह चुके है, और रटायर होने के बाद अब वकलत में जुटे है। हाल ही यूपी के पूर्व मुख् यमंत्रियों समेत बड़े दगि गज राजनीतजिज्ञों द्वारा सरकारी बंगलों पर कबजि प्रवृत्ति के गैरकनूनी बताते हु मुकद्दमा जो दायर किया था, उसमें सर्वोच् च न् यायालय ने वशिलकय बंगलों पर कबजि सारे ऐसे नेताओं के अवैध करार दे दिया है। जाहरि है क हड़कम् प मचा हुआ है। यहां लेखपाल शब् द क उल् लेख और उच् चारण-प्रयोग स न शुक् ला के लेकर ही है, क् यों क वे राजस् व से जुड़े प्रशासनकिटांचे की पहली सीढ़ी के सम् भालते रहे है ) ( 000000 : )

सरकारी बंगलों में सरकारी खजाने से मालपुआ उड़ाने पूर्व मुख् यमंत्रियों पर सर्वोच् च न् यायालय के करारे हमले ने नेताओं और जनप्रतनिधियों द्वारा की जाने वाली सरकारी खजाने के लूट क खुलासा तो किया है। इस प्रकरण पर हम लगातार श्रंखलाबद्ध स् टोरी आप तक पहुंचाते रहेंगे। उससे जुड़ी खबरों के पढ़ने के लार् वृप्रया नम् न लकिपर क्त्तिकीजा गा:-

[कमाल क लेखपाल](#)